

प्रकाशक

भारतीय विद्या मन्दिर

रतन बिहारेजी का मन्दिर

बंगलौर

लेखक के स्वामित्व सुरक्षित है।

अक्षरप चित्र

मजु नाहटा

मूल्य

साठ रुपये

मुद्रक

भागचन्द सुराना

सुराना प्रिन्टिंग वर्क्स

205 रवीन्द्र सरणी बलराम-१

प्रवेश

विराट वामन बन कर ही लीला कर सकता है
अन्यथा चर तो स्वयं अमचीय है।

विटप बीज में सत्य शब्द में समाकर ही
फल और अर्थ देता है

यह अनुभूति हो इस कृति की अभिव्यक्ति है।

११ सितम्बर १९९१

विराट वामन

लीला

डग	छोर
१ साधन	९
२ सम्पत्ता	१०
३ दण्ड	११
४ बन जाता	१२
५ माध्यम	१३
६ बिना श्रेता	१४
७ नही प्रार्थना	१५
८ चिन्तन	१६
९ प्राण	१७
१० दोष	१८
११ अव्यय समय	१९
१२ निद्रा	२०
१३ मन	२१
१४ सत्य	२२
१५ चेतना	२३
१६ अनुग्रह	२४
१७ पश	२५
१८ सर्वज्ञ	२६
१९ विश्वास	२७
२० कर्त्तव्य	२८
२१ दान	२९
२२ शब्द	३०
२३ अशा	३१
२४ चाहता बीज	३२
२५ उज्ज्वल है	३३
२६ पथ	३४
२७ स्वप्न	३५
२८ वर्तमान	३६
२९ सौरभ का सत्य	३७
३० विश्वकर्मा	३८
३१ कर्त्ता	३९
३२ देखता जो	४०
३३ प्रेत	४१
३४ विषधर	४२
३५ वह धूम	४३
३६ कविता	४४

३७	देता सगर	४५
३८	प्रकृति का	४६
३९	नही पचावों मे	४७
४०	रग रवि	४८
४१	करता समय	४९
४२	सूर्य	५०
४३	आँचा	५१
४४	भूमिका	५२
४५	सशय	५३
४६	नही कंकर	५४
४७	पूजा	५५
४८	संगीत	५६
४९	अग्रह	५७
५०	रहा अविद्ध	५८
५१	हर शूल	५९
५२	झरा शुष्क	६०
५३	अती रात	६१
५४	नही शून्य	६२
५५	उग अते	६३
५६	नही अरण्य	६४
५७	विस्मय	६५
५८	नहीं होता	६६
५९	नहीं कर सकता	६७
६०	कुण्ठा मुक्त	६८
६१	अध्ययन	६९
६२	वैदुष्य ऋण	७०
६३	धर्म	७१
६४	बिना भग किये	७२
६५	रहती	७३
६६	करता अनुक्षण	७४
६७	हर तत्व	७५
६८	भूमिका	७६
६९	प्रवाह	७७
७०	जो अगणित	७८
७१	करणा	७९
७२	अत्म श्लाघा	८०

भाईजी
माधोदासजी भूधड़ा
को

१

साधन

सगुण

साध्य

निर्गुण ।

२

सम्पदा

अवरण

सरदृति

सदाघरण

परम्परा

अनुसरण

सस्कार

अवतरण ।

३

दण्ड

सत्ता

क्षमा

सत !

४

बन जाता

अनगढ़

पापाण

प्रतिमा

नहीं देखती

श्रद्धा

शिल्प ।

५

माध्यम

सपन का

नयन

स्मृति का

मन ।

६

बिना

श्रोता

नहीं होती

स्थापित

शब्द की सत्ता ।

७

नही
प्राथना
अभावों की
चुगली
वह
स्वयं तक
पहुँचने की
सुनसान गली।

८

चिन्तन

ऊर्जा

चिन्ता

मूर्च्छा !

९

प्रप
प्रतिमा
जीवन
परिक्रमा ।

१०

दीप

दर्शन

दपण

बन्धन ।

११

अव्यय

समय

व्यय

माध्यम

वय ।

१२

निद्रा

मृत्यु का

पूर्वाभिनय ।

१३

मन

पुर

चित्त

अन्तःपुर

१४

सत्य

विन्दु

कल्पना

सिन्धु ।

१५

चेतना
चिन्मय
मन
मृण्मय ।

१६

अनुग्रह

अहेतु

कृपा

सहेतु ।

१७

यश
प्रदत्त
कीर्ति
कर गत ।

१८

सर्वज्ञ

मे

से

अनभिज्ञ ।

१९

विश्वास

विवशता

श्रद्धा

क्षमता ।

२०

कर्त्तव्य

लोक सम्मा

कर्म

स्व-मत ।

२१

दान

सकाम

त्याग

निष्काम ।

२२

शब्द

शिशु

सन्दर्भ

जनक ।

૨૩

આશા

અનાગત

વિશ્વાસ

આગત ।

२४

चाहता

बीज

अवरण

अंकुर

निरावरण ।

२५

उज्ज्वल

है

तम का

भविष्य ।

२६

पथ

स्वयं

न

इति

न

अथ ।

२७

स्वप्न

सत्य की

अमूर्त कला ।

२८

वर्तमान

का

क्षण

अतीत

का

संस्मरण ।

२९

सौरभ का
सत्य
उर्ध्व गमन
फल का
पतन ।

३१

कर्त्ता

मन

साक्षी

चेतन ।

३०

विश्वकर्मा

मन

चन्द्रिया

उपकरण ।

३३

ऋत

अकथ

मोक्ष

अपथ ।

३२

देखता

जो

अरा में

समग्र

वह

परम हस ।

३५

वह

धूस

काजल

मिला

जिसे

स्नेह का

सम्बल ।

३४

विषधर का
घर
भक्ष्य का
विवर ।

३५

वह

धूम्र

काजल

मिला

जिसे

स्नेह का

सम्बल ।

३६

कविता

चिड़िया

कला

नौड़ ।

३७

देता सागर
हर बूद को
मझपार से
मिलने का अवसर।

३८

प्रकृति का
पुरुष से
विद्रोह
प्रलय ।

३९

नहीं

पद्यतत्त्वों में

कल की गणना

वह

अत्मा का

गुणधर्म ।

४०

रंग

रवि

रस

चन्द्रमा

छवि

माटी ।

४१

करता समय
स्वयं को
बीज में व्यतीत
जबतक
नहीं आता
उगने का
क्षण ।

४२

सूर्य

यज्ञग्नि

पृथ्वी

विभूति ।

४३

ऋचा
अनुभूति की
त्थचा !

४४

भूमिका

छद्म

उपसहार ।

४५

सहाय

प्रथम चरण

विश्वास

मजिल ।

४६

नहीं
ककर
खज्र का
लभ्य
शिखर ।

४७

पूजा
समर्पण की
अनुज्ञा ।

४८

संगीत

गैत का

सहचर

नहीं अनुचर।

४९

आग्रह
शृङ्खल
पूर्वाग्रह
अर्गला ।

५०

रहा

अविद्ध

शूल नोक पर

तुहिन-कण

बह सिद्ध ।

५१

हर

शूल

कोई

दिशा राग

फूल ।

५४

नही

शून्य

निर्वेद

बटता

प्रकाश

बरसाता

मेघ

वह सवेद ।

५५

उग आते
छाल पर
शूल
नहीं खिलते
बिना घृत्ता फूल ।

५६

नहीं अरण्य

देखता

विहग

बिटप

जो शरण्य ।

५७

विस्मय

प्रेरणा

सशय

गवेषणा ।

५८

नहीं होता

तिष्ठत

विद्वेली ममाछी का

सचित मधु !

५९

नहीं
कर सकता
बिनाष्ट
बूद का अस्तित्व
सागर का
अहर्निश मन्थन ।

६०

कुण्डा मुक्त

मन

वैकुण्ठ ।

६१

अध्ययन

जोताई

स्वाध्याय

बोआई ।

६२

वैदुष्य ऋण

मनीषा

मूल धन ।

६३

धर्म

स्थिति

अधर्म

च्युति ।

६४

बिना

किये भग

वर्णमाला का

अनुशासन

नहीं बन पायेगे

ध्वनि धर्मा

अक्षर

अर्थधर्मा शब्द ।

६५

रहती
अस्त होने
पर भी
सूर्य की सत्ता
अन्यथा
नही जलता
कोई दीप।

६६

करता

अनुक्षण

परिवर्तन

सृष्टि का

नियमन ।

६७

हर तत्त्व
समिश्रण
निरपेक्ष
केवल चेतन ।

६८

भूमिका

अतीत

अभिव्यक्ति

वर्तमान

अनुभूति

भविष्य ।

६९

प्रवाह
परम्परा
रूढियां
आवर्त्त ।

७०

जो

अगणित

बहु

प्रकृति का

गणित ।

७१

करुणा

अन्तः स्रवित

दया

मनः द्रवित ।

७२

अहम् शलाघा

विस्मृति

अलोचना

स्मृति

